नज़रिया अपना-अपना

ललिता यदुवंशी

आमतौर पर किसी सन्दर्भ के परिप्रेक्ष्य में अलग-अलग विचारों को सम्मान एवं स्वीकार्यता कभी मिल पाती है और कभी नहीं। दुनिया को खुली आँखों से देखने के लिए हर इंसान का अपना एक नज़रिया होता है। जो व्यक्ति जैसा सोचता है दुनिया उसे वैसी ही नज़र आती है। नज़रिया हमारी सफलता पर बहुत बड़ा फ़र्क डालता है। हमें स्वयं को, अपने परिवार और मित्रों को हमेशा सकारात्मक सोच देना चाहिए। किसी भी क्षेत्र में पूर्ण धारणा बनाने के पूर्व अलग कोण से सोचने और फिर जाकर निर्णय लेने की ज़रूरत होती है। मुसीबतों में अवसर ढूँढ़ने का प्रयास ही सकारात्मक नज़रिए को दर्शाता है क्योंकि सिर्फ़ हाथ पर हाथ धरे रहने से काम नहीं हो सकता।

यदि अपने जीवन में सफल होना है तो अपने अन्दर सकारात्मक नज़रिया विकसित करना होगा। सफलता का प्रतिशत तब तक नहीं बढ़ेगा जब तक हम अपने अन्दर सकारात्मक नज़रिए वाला बीज नहीं बो देते। आमतौर पर अपने आसपास अक्सर यह कहते हुए सुना है कि इस सन्दर्भ में 'ऐसा है'। यह बहुत ही कम सुना कि 'इस बारे में मैं ऐसा सोचता हूँ और आप जो सोचते हैं वह आपका नज़रिया होगा। ऐसा भी हो सकता है।' क्योंकि संवाद के दौरान जाने क्यों हमारा नज़रिया कभी-कभी अहम बनकर हमें यह स्वीकारने से रोकता है कि उनका अपना विचार है या हो सकता है। जैसा मैं सोचता हूँ/सोचती हूँ ज़रूरी नहीं कि वह भी ऐसा सोचते हों। अच्छे संवाद के दौरान यह ज़रूरी है कि विचारों के हर नज़रिए को सभी के समक्ष रखा जाए। अपनी बात को खुलकर कहा जाए। हर नज़रिए के प्रति तार्किक चिन्तन शैली को सकारात्मकता के साथ ग्रहण किया जाए।

एक शिक्षिका होने के नाते कुछ बात चल रही हो और कक्षा-कक्ष और बच्चों का ज़िक्र न आए ऐसा तो हो नहीं सकता। इसी बात से जुड़ा डायरी में लिखा एक अनुभव साझा करना चाहती हूँ जो कुछ वक़्त पहले का है, जिसमें बच्चों ने किसी एक सन्दर्भ के बारे में एक-दूसरे की बातों को सुना, अपने विचारों को रखा और उन विचारों में उनके नज़रिए को समझने का मौका मिला।

बात 4 फरवरी 2015 की है। एक कहानी पर काम हुआ। 'बोलते चेहरे' द्वारा काम किया गया। इसमें 4 विभिन्न भाव वाले चित्र बनाए गए। इस कार्य को कराने का मेरा उद्देश्य था कि बच्चे किसी चित्र, घटना, समाचार, अनुभव, कहानी या किसी भी विषयवस्तु को सुनकर, पढ़कर या देखकर उसमें निहित भाव को समझें एवं सहजतापूर्ण, स्पष्ट कारणों के साथ अपने विचार व्यक्त करें।

शुरुआत में सभी ने आँखें बन्द कीं। उन्हें धीरे-धीरे, धीमी आवाज़ में स्पष्ट निर्देश दिए गए कि ऐसी कोई बात याद करो या कोई अनुभव जो आप अपने साथियों के साथ साझा करना चाहते हैं। और जो इस कार्य को निर्देशानुसार पूर्ण कर लें, सोच लें, वह अपनी आँखें खोलते जाएँ और दूसरों के काम में व्यवधान न डालें। बच्चों ने वैसा ही किया। सभी ने सोचा और अपने अनुभव को संक्षिप्त रूप में सभी के साथ साझा किया कि यह अनुभव किस से जुड़ा है? किसी का अनुभव शादी से जुड़ा था, तो किसी का किताब से। किसी का घर इत्यादि के बारे में था। फिर मैंने पूछा, "बताओ आपने जो सोचा वह इन चारों चेहरे में से किसके साथ जोड़ा जा सकता है?" सभी ने अपने नज़रिए के अनुसार चेहरों को उठाकर अपनी-अपनी बात को रखा। बच्चों ने ये महसूस किया कि किसी चीज़ के बारे में सुनकर, पढ़कर या देखकर हो सकता है कि किसी को अच्छा लगे और किसी को नहीं। उसके पीछे सबके अपने-अपने कारण हो सकते हैं।

मैंने भी अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए अगला कार्य शुरू किया। दो चित्र बोर्ड पर बनाए गए। चित्र के बारे में कोई बात नहीं की गई। सभी बच्चों को अनुमान लगाने को कहा गया कि इस चित्र को देखकर आपको कैसा लग रहा है और क्यों? बच्चों को थोड़ा समय दिया गया। बच्चों द्वारा सोचे जाने के बाद मेरे द्वारा निर्देश दिया गया कि चित्रों को देखकर बोलते चेहरों में से एक उठाओ और उसका कारण बताओ। चित्र के सन्दर्भ में बच्चों के अलग-अलग नज़रिए और कारणों को सुनकर अच्छा लगा। एक ही चित्र को देखकर एक बच्चे ने कहा, "मुझे यह चित्र इसलिए अच्छा लगा क्योंकि विद्यालय के पास नदी है जिसे पार करके बच्चे मजे से स्कूल आ रहे हैं।" वहीं इसी चित्र के बारे में अन्य बच्चों ने कहा कि मुझे उदासी वाला चेहरा लगाना है क्योंकि उन्हें लगा कि बच्चों की विद्यालय से छुट्टी हो गई है और बच्चे घर जा रहे हैं।

सभी बच्चों के संवादों व कारणों को सभी ने ध्यान से सुना और मैंने बात को समझते हुए अन्तिम बात सोचने के लिए कहा, "तो बताओ, इस कहानी को आप सुखान्त मानोगे या

दुखान्त और क्यों? कहानी के दौरान आप कब ख़ुश हुए? कब उदास? कहाँ परेशान? और कब गुस्सा आया? कौन-से पक्ष हैं जो आपको अच्छे लगे? कौन-से ऐसे पक्ष थे जो आपको कम अच्छे लगे और क्यों? इस बारे में घर पर भी सोचना। कल बात करेंगे और कुछ अन्य भी।" इतना कहते हुए मैं कक्षा से बाहर आने लगी, तभी कक्षा से बाहर निकलते हुए बच्चों का सवाल था कि – दीदी! जब आपने चित्रों को बनाया तब आपने क्या सोचकर बनाया?

'नज़रिया' हमारे बिलीफ सिस्टम पर निर्भर करता है। हमने जो बचपन से सुना है, जिस माहौल में हम बड़े हुए हैं उसी नज़र से हम दुनिया को देखते हैं। कुछ लोगों में वक़्त के साथ समझ आती जाती है, मगर कुछ लोगों का नज़रिया वही रहता है। हर इंसान के सोचने का तरीक़ा अलग होता है। एक ही परिस्थिति में सबका नज़रिया अलग होगा। हर इंसान जो भी करता है उसकी नज़र में वह सही होता है। पर कभी-कभी हमें सामने वाले की नज़र से भी सोचना चाहिए और अपनी समझ को सही मायने में पुख्ता बनाने हेतु हमें अपना नज़रिया बदलना होगा देखने का, सोचने का और समझने का क्योंकि जो हम देखते हैं, वही हम सोचते हैं। धीरे-धीरे वही हम समझने लगते हैं बशर्ते कि हमारा नज़रिया सकारात्मक हो, तर्कपूर्ण हो।

ललिता यदुवंशी अज़ीम प्रेमजी स्कूल, टोंक, राजस्थान में हिन्दी और अँग्रेज़ी पढ़ाती हैं। वे शिक्षा में स्नातक और हिन्दी और शिक्षा में स्नातकोत्तर हैं। वह 2005 से विभिन्न संस्थानों में एक शिक्षिका के रूप में काम कर रही हैं। उनके शौक में शामिल है पढ़ना, संगीत सुनना और यात्रा करना। उनसे lalita.yaduvanshi@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।